।। ओ३म्।।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

त्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह। तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेष यत्र देवाः सहाग्निना।। यजु.20/25

जिस देश में ब्रह्म तेज और क्षात्रबल दोनों कन्धे से कन्धा मिलाकर एक साथ प्रीतिपूर्वक व्यवहार करते हैं। जहाँ विद्वान लोगअग्नि विद्या को जानने वाले हैं वह देश पुण्यशाली होता है।

वर्ष 36, अंक 9 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 7 जनवरी, 2013 से 13 जनवरी, 2013

विक्रमी सम्वत् 2069 दयानन्दाब्द : 188

सृष्टि सम्वत् 1960853113 वार्षिक : 250 रुपये

फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

Website:www.aryamahasammelan.com पृष्ठ 1 से 4 तक

वेद - चिन्तन

वेदों की वैज्ञानिक व्याख्या : एक जनोपयोगी निदर्शन

- डॉ० मृदुला गुप्ता

वेद प्राचीन भारतीय साहित्य की अमूल्य निधि हैं। इस प्राचीन भारतीय साहित्य को जितनी श्रद्धा से युगों–युगों से देखा जाता रहा है, उससे यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि इस साहित्य में अत्यन्त प्रेरणास्पद अमूल्य सत्यों का उद्घाटन हुआ है।

बहुत से भारतीय विद्वान् यह मानते हैं कि वेदों में एक ही मंत्र के कई प्रकार के अर्थ हैं। पं. भगवद्दत्त कहते हैं–वेदविद्यागत संज्ञाएँ निश्चितार्थ रखती हैं , पर प्रकरणवशात् पृथक–पृथक अर्थ भी देती हैं। निरुक्तकार यास्क के अनुसार भी वैदिक मंत्रों के तीन प्रकार के अर्थ किए जा सकते हैं– आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक। यह ऋषियों के अद्भुत बुद्धि चातुर्य का परिणाम है कि उन्होंने कई सत्यों का उद्घाटन एक ही मंत्र द्वारा कर दिया है। अतः जिन मंत्रों का आध्यात्मिक अर्थ किया गया है, उनका वैज्ञानिक अर्थ भी किया जा सकता है। कुछ वैदिक मंत्रों के शब्दार्थ देखने से वे बड़े अटपटे लगते हैं और उन अर्थों को देखकर ऐसा लगता है कि इनका कोई अन्य अर्थ भी है जो मंत्रों में निहित है और साधारण तौर पर दिखाई नहीं देता।

अतः मंत्रों में वैज्ञानिक बातों का संकेत ही मिलता है, क्योंकि ऋषियों ने कई अर्थों का समावेश एक ही मंत्र में करना चाहा।

वेदों में ऐसे शब्दों का प्रयोग किया गया है जो अनेक अर्थ वाले हैं। शब्द का एक अर्थ लेने पर मंत्र आध्यात्मिक अर्थ को सूचित करते हैं, तो अन्य अर्थ लेने पर वे वैज्ञानिक अर्थ को द्योतित करते हैं। कुछ मंत्रों में वैज्ञानिक अर्थ स्पष्ट रूप से दिखाई देता है तो आध्यात्मिक अर्थ गूढ़ है, तो कुछ में आध्यात्मिक अर्थ स्पष्ट है पर वैज्ञानिक अर्थ छुपा हुआ है। गहराई से विचार करने पर दोनों अर्थ स्पष्ट हो जाते हैं। अतः वेद मंत्रों के दोनों प्रकार के अर्थ किए जा सकते हैं और मान्य हो सकते हैं। पर किसी शब्द का जो वैज्ञानिक अर्थ एक स्थान पर किया जाए वही अर्थ अन्य स्थानों पर भी संगत होना चाहिए, यद्यपि प्रसंग के अनुसार उसी शब्द का अन्य अर्थ भी हो सकता है। साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि एक पूरे सूक्त में किस प्रकार का अर्थ संगत हो रहा है। उदाहरणार्थ, ऋग्वेद के अस्यवामीय सूक्त के कुछ मंत्रों का आध्यात्मिक, तो कुछ का वैज्ञानिक अर्थ किया गया है। इसके सभी मंत्रों का वैज्ञानिक अर्थ तो किया जा सकता है, पर आध्यात्मिक नहीं। अतः किसी भी पूरे सूक्त की तर्क शृंखला प्राप्त होगी। मंत्रों का भाष्य करते समय अधिकांश शब्दों का अर्थ अन्य विद्वानों के भाष्यों, कोष, धातुपाठ आदि के आधार पर किया गया है। अर्थ करते समय प्रसंग का भी ध्यान रखना आवश्यक है। ऋषि व देवता का भी ध्यान रखना है। इन्हीं सब बातों पर विचार करते हुए कुछ शब्दों का वैज्ञानिक अर्थ यहाँ प्रस्तुत किया जाता है।

वेदों में गौ शब्द मिलता है। गौ और धेनु का आकाश में विचरण करने का वर्णन प्राप्त होता है। अतः गौ का अर्थ 'गाय' उचित नहीं है। गौ का मूल अर्थ 'गतिशील' है। निघण्टु में गौ को पृथ्वी–नामों में कहा गया है। अतः पृथ्वी आदि ग्रहों को गौ कहा जा सकता है। ग्रह शब्द 'ग्रह' धातु से निष्पन्न है।

– शेष अगले अंक में

जब हम वेदों की औपोरूषेयता को तर्क संगत ढंग से विश्व के विद्वानों के सम्मुख रखते हैं तो उस समय हम वेदों की वैज्ञानिकता को साथ रखते हैं। महर्षि दयानन्द के पूर्व लगभग सभी भारतीय और पाश्चात्य वेद विद्वान वेदों की वैज्ञानिक व्याख्या करने की सामर्थ्य नहीं रखते थे। उन्हें आधिदेविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक अर्थ करने की भी समझ नहीं थी। इस लिए वेदों के सम्बन्ध में विश्व समाज में भ्रान्तियाँ, अन्धविश्वास और रूढ़ियाँ फैली हुई थीं। महर्षि ने निरुक्त की सहायता लेकर वेदों का व्याकरण संगत अर्थ किया और उनकी वैज्ञानिकता, दार्शनिकता और जीवन–धर्मिता को मानव मात्र के कल्याण हेतु प्रस्तुत करके वेदों के सम्बन्ध में सभी प्रकार की भ्रान्तियाँ, अन्धविश्वास और पाखण्ड का निर्मूल किया। महर्षि के उपरान्त आर्य समाज और आर्य समाज से इतर अनेक वेद विद्वानों ने अपनी क्षमता के अनुसार वेदों के भाष्य किए, लेकिन सभी भाष्यों में एक–रूपता नहीं मिलती है। इसका कारण वेदों का औपोरूषेय होना और इनका अनेक–अर्थी होना है। प्रस्तुत लेख में वेदों की वैज्ञानिकता को व्याकरण के अनुसार प्रस्तुत किया गया है। लेख आर्य महासम्मेलन में आयोजित 'वेद गोष्ठी' में प्रस्तुत किया गया था जो विद्वानों द्वारा सराहा गया था। लेख पाठक गणों के लिए उपयोगी होगा, ऐसी आशा है। लेख प्रकाशित करने का हमारा उद्देश्य वेदों की वैज्ञानिक व्याख्या को जनसामान्य को समझाना है।

विदेशी दासता की पहचान है 1 जनवरी नववर्ष : एक गवेषणात्मक विवेचन

दिसम्बर नजदीक आते ही जगह–जगह जश्न मनाने की तैयारियाँ प्रारम्भ हो जाती हैं। करोड़ों रुपए का खर्चा नव वर्ष की तैयारियों में खर्च हो जाता है। होटल, रेस्तरॉ पब इत्यादि अपने–अपने ढंग से इसके आगमन की तैयारियाँ करने लगते हैं। 'हैप्पी न्यू ईयर' के बैनर, होर्डिंग, पोस्टर व कार्डों के साथ दारू की दुकानों की चाँदी हो जाती है। कहीं–कहीं तो जाम से जाम इतने टकराते हैं कि घटनाएँ दुर्घटनाओं में बदल जाती हैं और मनुष्य मनुष्यों से तथा गाड़ियाँ गाड़ियों से भिड़ने लगते हैं। रात–रातभर जागकर नया साल मनाने से ऐसा प्रतीत होता है मानो सारी खुशियाँ एक साथ आज ही मिल जायेंगी। हम भारतीय पश्चिमी अंधानुकरण में इतने सराबोर हो जाते हैं कि उचित अनुचित का बोध त्याग अपनी महान सांस्कृतिक मर्यादाओं को तिलान्जलि दे बैठते हैं। पता ही नहीं लगता कि कौन अपना है और कौन पराया। क्या यही है हमारी संस्कृति या त्योहार मनाने की परम्परा?

एक जनवरी से प्रारम्भ होने वाली काल गणना को हम ईस्वी सन् के नाम से जानते हैं, जिसका सम्बन्ध ईसाई जगत् व ईसा मसीह से है। इसे रोम के सम्राट जूलियस सीजर द्वारा ईसा के जन्म के तीन वर्ष बाद प्रचलन में लाया गया।भारत में ईस्वी सम्वत् का प्रचलन अंग्रेजी शासकों ने 1752 में किया। अधिकांश राष्ट्रों के ईसाई होने और अंग्रेजों के विश्वव्यापी प्रभुत्व के कारण ही इसे विश्व के अनेक देशों ने अपनाया। 1752 से पहले ईस्वी सन् 25 मार्च से शुरू होता था किन्तु 18वीं सदी से इसकी शुरूआत एक जनवरी से होने लगी। ईस्वी कलेण्डर के महीनों के नामों में प्रथम छः माह अर्थात् जनवरी से जून रोमन देवताओं जोनस, मार्स व मया इत्यादि के नाम पर हैं। जुलाई और अगस्त रोम के सम्राट जूलियस सीजर तथा उनके पौत्र आगस्टस के नाम पर तथा सितम्बर से दिसम्बर तक रोमन संवत् के मासों के आधार पर रखे गये। जुलाई और अगस्त क्योंकि सम्राटों के नाम पर थे इसलिए दोनों ही 31 दिनों के माने गये अन्यथा कोई दो मास 31

– शेष पृष्ठ 2 पर

राजसत्ता का समाज, संस्कृति और मानव मन पर कितना प्रभाव पड़ता है, इसे जानने के लिए हमें किसी पुस्तक या पुस्कालय की सहायता की आवश्यकता नहीं है। इसका प्रत्यक्ष प्रभाव हम अपने प्रतिदिन के जीवन व्यवहार में स्पष्ट रूप से सुन–देख सकते हैं। देश की स्वतन्त्रतता के उपरान्त हिन्दी के स्थान पर अंग्रेजी, वैदिक संविधान 'मनुस्मृति' के स्थान पर 1935 में अंग्रेजों द्वारा बनाए गए 'डोमेनियन स्टेट' को संविधान के रूप में और भारतीय वर्ष गणना के स्थान पर ईसाई या पाश्चात्य काल गणना (ईस्वी सन्)को वरीयता देने के लिए संविधान में व्यवस्था की गई। शासन के इस विदेशी अन्धानुकरण और तरजीह देने का परिणाम यह हुआ कि सम्पूर्ण भारतीय समाज अंग्रेजी, अंग्रेजीयत, विदेशी संस्कृति और सभ्यता को चाहे–अनचाहे अपनाने लगा। इसी प्रकार देवनागरी लिपि के स्थान पर यूरोपीय लिपि, भारतीय विक्रमी संवत् के स्थान पर विदेशी ईसाई सन् को– अवैज्ञानिक और आव्यवहारिक होते हुए भी मानने के लिए मजबूर कर दिया गया। आज स्थिति यह हो गई है कि नई पीढ़ी भारतीय हिन्दी मास, देवनागरी लिपि,–अंक और अक्षर और ऋतुगत नक्षत्रों को जानती ही नहीं। आप समझ सकते हैं कि कथित स्वतन्त्रतता के उपरान्त आज भी हम कई अर्थों में किस प्रकार मानसिक और शैक्षिक रूप से परतन्त्र हैं। और अब तो, हमारी स्थिति इस प्रकार की हो गई कि विदेशी सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक परतन्त्रतता को ही अपनी प्रगति और विकास का मानक मान बैठे हैं। प्रस्तुत लेख, इन्हीं अनेक सन्दर्भों को समेटता हुआ आप के विचारार्थ प्रकाशित किया जा रहा है। आप को यदि लेख विचार करने पर मजबूर करे तो मानिए अभी आप के अन्दर वैदिक संस्कृति और जीवनदर्शन के मूल्य उपस्थित हैं। लेख प्रकाशित करने का उद्देश्य है कि आप लेख का स्वाध्याय करने के उपरान्त अपने 'स्व' को समझेंगे और दूसरों को भी समझाएँगे।(9868235056)

वेद और योग : मानव जीवन को पूर्ण बनाने के अनिवार्य विषय-एक अतिगम्भीर गवेषणा

– डॉ. भारतेन्दु द्विवेदी

गतांक से आगे –

अथर्ववेद के एक अन्य मन्त्र में कहा गया है कि जो मृत्यु से बचने के लिए प्राणायाम के द्वारा प्राणों को स्वाधीन करके अधोगति से उर्ध्वगति के लिए प्रेरित करता है, उसे अपूर्वलाभ की प्राप्ति होती है।

मूर्धानमस्य संसीव्याथर्वा हृदयं च यत्। मस्तिष्कादूर्ध्वः प्रैरयत्पवमानोऽधि शीर्षतः।।

अर्थात् अधोगति की ओर जाने वाले प्राणों को ऊर्ध्व करके ब्रह्मरन्ध्र में ले जाकर योगी उससे भी अलग सूर्य की सुषुम्ना किरण से संयुक्त करता है, वह मन को प्रथम आत्मा से संयुक्त करता है। तब उस निश्चल पवित्र योगी को अपूर्व लाभ की प्राप्ति होती है।

अथर्ववेद के एक मन्त्र में कहा गया है कि जो निश्चल योगी अपने हृदय और मन को एक साथ करके प्राणों को ऊपर की ओर प्रेरित करेगा उसे दिव्य कोष की प्राप्ति प्राणों के माध्यम से हो जाएगी। यह दिव्य कोष शिर में है।

तद् वा अथर्वणः शिरो देवकोशः समुज्जितः। तत् प्राणो अभि रक्षति शिरो अन्नमथो मनः।।

अर्थात् उस निश्चल योगी का वह शीर्षस्थानीय अभ्यास एकत्रित किया हुआ दिव्य कोष है। उस शीर्ष स्थानीय अभ्यास की प्राण सब तरह से रक्षा करता है और अन्न मन की रक्षा करते हैं। इस मन्त्र में स्पष्ट है कि ऋषि का शिर साक्षात् देवकोष है। इसमें अन्नमय, प्राणमय और मनोमय कोश हैं।

अथर्ववेद का कण्ड 11 सूक्त–4 पूरा प्राण से सम्बन्धित है। इस सूक्त के 26 मन्त्रों में प्राण का ही विवेचन किया गया है। इसमें कहा गया है कि प्राण शक्ति ही संसार का आधार है। प्राण ही संसार का नियामक है।

प्राणे ह भूतं भव्यं च प्राणे सर्वं प्रतिष्ठतम्। प्राणो ह सर्वस्येश्वरो।

अथर्ववेद में प्राण और अपान की स्तुति करते हुए कहा गया है कि हे प्राण, जीवन का कार्य करने वाले तुझे नमस्कार है। अपान का कार्य करने वाले तुझे नमस्कार है।

नमस्ते प्राण प्राणते नमो अस्त्वपानते।

अथर्ववेद के एक मन्त्र में कहा गया है कि शरीर आठ चक्रों से युक्त है, इसमें सहस्रार चक्र है, ऐसा यह प्राणचक्र आगे–पीछे चलता रहता है।

अष्टाचक्रं वर्तत एकनेमि सहस्राक्षरं प्र पुरो नि पश्च।

शरीर में आठ चक्र हैं, जिनमें प्राण जाता है और विलक्षण कार्य करता है। ये चक्र हैं– **मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, सूर्य, अनाहत, विशुद्धि, आज्ञा और सहस्रार।** ये गुदा से लेकर सिर के ऊपरी भाग तक आठ स्थानों में हैं। पीठ के मेरुदण्ड में इनकी स्थिति है। प्रत्येक चक्र में प्राण जाता है और अपना काम करता है। ऊपर मस्तिष्क में सहस्रार चक्र है। प्राण का केन्द्र हृदय में है। इस प्रकार एक केन्द्र के साथ आठ चक्रों में चलने वाला यह प्राण–चक्र है। श्वास–उच्छ्वास और प्राण–अपान द्वारा प्राण–चक्र की आगे और पीछे की गति होती है। प्राणायाम के अभ्यास से ही योगी को प्राण के आठ चक्रों में पहुँचने का अनुभव होता है। प्राणायाम करने वाले योगी को ही प्राणशक्ति उनमें प्रकट होती है।

यदि महर्षि पतंजलि द्वारा प्रतिपादित योग के आठ नियमों पर दृष्टिपात किया जाय तो आठों अंगों में निहित नियमों पर वेदों में अत्यन्त विस्तार के साथ वर्णन प्राप्त होता है। यह एक पूर्ण शोध का विषय है और इसका वर्णन संक्षेप में सम्भव नहीं है। वैदिक योग साधना का लक्ष्य है आत्मा का परमात्मा के साथ ऐक्य। यह मार्ग अत्यन्त कठिन है। इस बात को ऋग्वेद के एक मन्त्र में कहा गया है। मन्त्र का भाव है कि साधना का मार्ग बहुत लम्बा है। इसमें पर्वत की एक चोटी से पर्वत की दूसरी चोटी पर चढ़ना पड़ता है। इस प्रकार कठोर साधना के अनेक पर्वत शिखरों को पार करना पड़ता है। तब सिद्धि प्राप्त होती है।

यत् सानोः सानुमारुहद्, भूर्यस्पष्ट कर्त्वम्। तदिन्द्रो अर्थं चेतति, यूथेन वृष्णिरेजति।।

ऋग्वेद के एक मन्त्र में योगसाधना के ध्येय की कामना करते हुए कहा गया है कि हे अग्निदेव (परब्रह्म) यदि मैं तू हो जाऊँ या तू मैं हो जाए तो इस लोक में तेरे सभी आशीर्वाद सिद्ध हो जाएँ। वैदिक योगसाधना का लक्ष्य जहाँ एक ओर परब्रह्म का साक्षात्कार करते हुए मोक्ष की प्राप्ति था वहीं प्राणी मात्र में सद्भाव, मैत्री, बन्धुत्व और आपसी रागद्वेष से रहित एक संगठित समाज की स्थापना था। वेद मन्त्रों में निहित यह भावना सदियों पूर्व जितनी सार्थक और प्रासंगिक थी, आज भी उतनी ही सार्थक और प्रासंगिक है। आवश्यकता इस बात की है कि पुनः इन सिद्धान्तों को वास्तव में अपने जीवन का अंग बनाया जाय। **(लेखक का. न. रा. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर भदोही,उ.प्र.में एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष– संस्कृत हैं)**

प्रथम पृष्ठ का शेष

विदेशी दासता की .....

दिनों या लगातार बराबर दिनों की संख्या वाले नहीं हैं।

ईसा से 753 वर्ष पहले रोम नगर की स्थापना के समय रोमन संवत् प्रारम्भ हुआ, जिसके मात्र दस माह व 304 दिन होते थे। इसके 53 साल बाद वहाँ के सम्राट नूमा पाम्पीसियस ने जनवरी और फरवरी दो माह और जोड़कर इसे 355 दिनों का बना दिया। ईसा के जन्म से 46 वर्ष पहले जूलियस सीजर ने इसे 365 दिन का बना दिया। सन् 1582 ई. में पोप ग्रेगरी ने आदेश जारी किया कि इस मास के 4 अक्टूबर को इस वर्ष का 14 अक्टूबर समझा जाये। आखिर क्या आधार है इस काल गणना का? यह तो ग्रहों व नक्षत्रों की स्थिति पर आधारित होनी चाहिए। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् नवम्बर 1952 में वैज्ञानिक और औद्योगिक परिषद् के द्वारा पंचाँग सुधार समिति की स्थापना की गयी। समिति ने 1955 में सौंपी अपनी रपट में विक्रमी संवत को स्वीकार करने की सिफारिश की थी। किन्तु तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू के आग्रह पर ग्रेगेरियन कलेण्डर को ही सरकारी कामकाज हेतु उपयुक्त मानकर 22 मार्च 1957 को इसे राष्ट्रीय कलेण्डर के रूप में स्वीकार कर लिया गया।

ग्रेगेरियन कलेण्डर की काल गणना मात्र दो हजार वर्षों के अति अल्प समय को दर्शाती है। जबकि यूनान की काल गणना 3582 वर्ष, रोम की 2757 वर्ष, यहूदी 5768, मिस्र की 28671, पारसी 198875 तथा चीन की 96002305 वर्ष पुरानी है। इन सबसे अलग यदि भारतीय काल गणना की बात करें तो हमारे ज्योतिष के अनुसार वर्तमान सृष्टि की आयु एक अरब 97 करोड़ 39 लाख 49 हजार 110 वर्ष है। जिसके व्यापक प्रमाण हमारे पास उपलब्ध हैं। हमारे प्राचीन ग्रंथों में एक–एक पल की गणना की गयी है।

जिस प्रकार इस्वी सम्वत् का सम्बन्ध ा ईसाई जगत् से है उसी प्रकार हिजरी सम्वत् का सम्बन्ध मुस्लिम जगत् और हजरत मुहम्मद साहब से है। किन्तु विक्रमी सम्वत् का सम्बन्ध किसी धर्म से न हो कर सारे विश्व की प्रसिद्ध खगोल सिध्दान्त व ब्रह्माण्ड के ग्रहों व नक्षत्रों से है। इसलिए भारतीय काल गणना पंथ निरपेक्ष होने के साथ सृष्टि की रचना व राष्ट्र की गौरवशाली परम्पराओं को दर्शाती है। इतना ही नहीं ब्रह्माण्ड के सबसे पुरातन ग्रंथ वेदों में इसका वर्णन है। नव संवत् अर्थात् संवत्सर का वर्णन यजुर्वेद के 27वें व 30वें अध्याय के मन्त्र क्रमांक क्रमशः 45/ 5/ 15 में विस्तार से दिया गया है। विश्व में सौर मण्डल के ग्रहों व नक्षत्रों की चाल व निरन्तर बदलती उनकी स्थिति पर ही हमारे दिन, महीने,वर्ष और उनके सूक्ष्मतम गणना पर आधारित होते हैं। इसी वैज्ञानिक आधार के कारण ही पाश्चात्य देशों के अंधानुकरण के बावजूद हम विशुध्द रूप से विक्रमी संवत् के पंचाँग को मान्यता देते हैं। राष्ट्र के स्वाभिमान व देश प्रेम को जगाने वाले अनेक प्रसंग चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से जुड़े हुए हैं। यह वह दिन है, जिस दिन से भारतीय नव वर्ष प्रारम्भ होता है। यह सामान्यतः अंग्रेजी कलेण्डर के मार्च या अप्रैल माह में पड़ता है। इसके अतिरिक्त जापान, फ्रांस, थाईलैण्ड इत्यादि अनेक देशों के नव वर्ष इसी दौरान पड़ते हैं।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से सम्बन्धित अनेक सांस्कृतिक और प्राकृतिक तथ्य जुड़े हुए हैं, और ईसाई नव वर्ष से एक भी तथ्य नहीं जुड़े हैं।

क्या, एक जनवरी के साथ ऐसा एक प्रसंग जुड़ा है जिससे राष्ट्र प्रेम जाग सके, आत्म स्वाभिमान जाग सके या श्रेष्ठ होने का भाव जाग सके । मैकाले की अंग्रेजी शिक्षा पद्धति का ही नतीजा है कि आज हमने न सिर्फ़ अंग्रेजी बोलने में हिन्दी से ज्यादा गर्व महसूस किया बल्कि अपने प्यारे भारत का नाम संविधान में **इंडिया दैट इज भारत** तक रख दिया। इसके पीछे यही धारणा थी कि भारत को लेकर इंडिया को याद रखो क्योंकि यदि भारत को याद रखोगे तो भारत याद आएंगे, शकुन्तला व दुष्यन्त याद आएंगे, हस्तिनापुर व उसकी प्राचीन सभ्यता और परम्परा याद आएगी।

आइये! विदेशी दासत्व को त्याग स्वदेशी अपनाएँ और गर्व के साथ भारतीय नव वर्ष अर्थात् विक्रमी संवत् को ही मनाना प्रारम्भ करें तथा इसका अधिक से अधिक प्रचार करें।

– विनोद बंसल, 9810949109

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 40 रु.	प्रचारार्थ 25 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियां लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

विज्ञापन के माध्यम से करोड़ों लोगों तक पहुंचाई स्वामी श्रद्धानन्द जी की बलिदान गाथा

महाशय धर्मपाल जी (चेयरमैन, एम.डी.एच.) एवं श्री धर्मपाल आर्य जी (मन्त्री, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट) का हार्दिक धन्यवाद

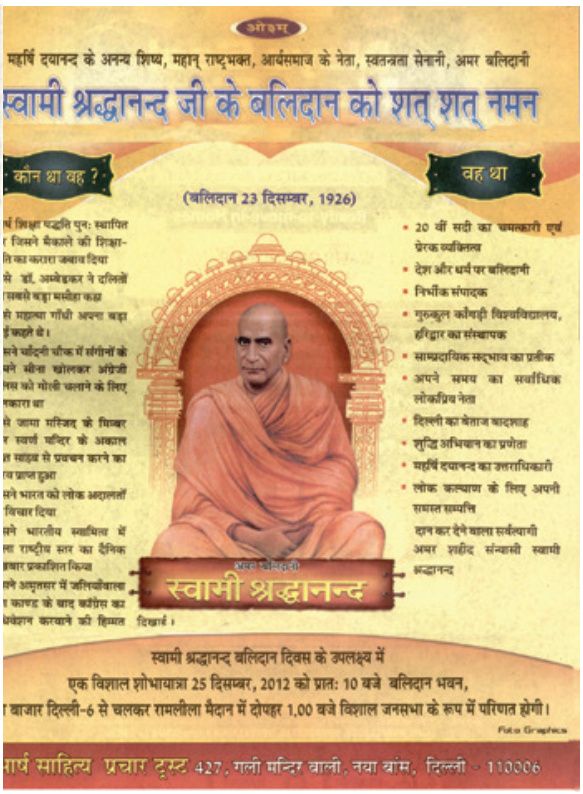

हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस 23 दिसम्बर के अवसर पर प्रसिद्ध उद्योगपति और आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल (एम.डी.एच) की ओर से आजसमाज (दिल्ली) दैनिक नवज्योति (राजस्थान) गुजरात वैभव (गुजरात) हिन्दुस्तान दिल्ली) पंजाब केसरी आदि अखबारों में प्रेरक विज्ञापन प्रकाशित किए गए। इसी प्रकार आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट की ओर से (श्री धर्मपाल जी) हिन्दुस्तान दैनिक पत्र में विज्ञापन प्रकाशित किया गया। इन विज्ञापनों के प्रकाशन से हिन्दी क्षेत्र में ही नहीं बल्कि गुजराती भाषा भाषी क्षेत्र में भी आर्य समाज, स्वामी श्रद्धानन्द और उनके कार्यों के सम्बन्ध में आम जनता को वृहद जानकारी प्राप्त हुई। ज्ञातव्य है, अखबारी विज्ञापनों से मानस मन में बहुत ही सकारात्मक और ज्ञानवर्द्धक प्रभाव पड़ता है। गौरतलब है, दोनों आर्य महानुभावों के द्वारा प्रत्येक वर्ष आर्य समाज के महापुरुषों और प्रमुख आर्य पर्वों पर वृहद स्तर पर अखबारों में विज्ञापन दिए जाते हैं। यह आर्य जनता के लिए ही नहीं वैदिक धर्म, संस्कृति और जीवन के लिए भी बहुत ही प्रेरक और उपयोगी हैं।

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव के अवसर पर शुभकामना विज्ञापनों से करें प्रचार

महर्षि दयानन्द के जन्मोत्सव पर इस वर्ष 10 से अधिक अखबारों में विज्ञापन दिए जाएंगे। ज्ञातव्य है, गत वर्ष भी इसी प्रकार से विज्ञापन दिए गए थे, जिससे करोड़ों लोगों के पास महर्षि के अवदान और जीवन दर्शन की प्रेरणा पहुँची। इन विज्ञापनों से जन मानस में महर्षि, आर्य समाज और वेद के प्रति जहाँ जिज्ञासा उत्पन्न होती है वहीं पर श्रद्धा भी पैदा होती है।

आर्य महानुभाव, आर्य समाजें, आर्य शिक्षण संस्थाएँ और अन्य आर्य समाज से सम्बन्धित संस्थाएँ इसमें भाग लेकर अपनी पुण्य आहुति सकते हैं। विज्ञापन की दर 1500 रुपये प्रति व्यक्ति/संस्था है। इसके लिए चेक 'आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य' के नाम 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001 को भेजा जाना चाहिए।

–: निवेदक :–

महाशय धर्मपाल	सुरेन्द्र रैली	राजीव आर्य
प्रधान	वरिष्ठ उपप्रधान	मन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य

भूल सुधार : *आर्य सन्देश के अंक 8 दिनांक 31 दिसम्बर2012 से 6 जनवरी 2013 पृष्ठ संख्या तीन पर प्रकाशित लेख के शीर्षक में 'वदों की विविध वर्णन शैलियों' में 'वदों शब्द गलत प्रकाशित हो गया। इसके स्थान पर 'वेदों की विविध वर्णन–शैलियों में' होना चाहिए। इसी प्रकार पृष्ठ संख्या सात पर शोक समाचार में 'श्री महेन्द्र सिंह आर्य को भतृ शोक में 'आर्य समाज के महामन्त्री श्री ओमप्रकाश पटवारीजी का निधन प्रकाशित होग गया है। यह भूलवस प्रकाशित हो गया। इसके स्थान पर 'आर्य समाज औचन्दी के महामन्त्री श्री महेन्द्र सिंह आर्य के भाई श्री ओम प्रकाश पटवारी होना चाहिए। भूल के लिए खेद है। –सम्पादक*

नये वर्ष का जश्न : विचार करें

आप सब समझदार लोग हैं। लोग कहते हैं की आज नया साल (1 जनवरी) शुरू हुआ। देखा जाये तो हर दिन निकलता है तो उसी दिन से नया साल शुरू हो जाता है, मगर संसार में काम को चलाने के लिए दिन का नाम रखना पड़ता है। संसार में सब लोग है, अगर नाम न रखेंगे तो फिर किस को बुलायेंगे। इसीलिए नया साल का नाम भी रखा हुआ है। पुराना साल 2012 नया साल 2013, 1 जनवरी से शुरू हो गया। हम सब ने देखा पिछले साल में हमने कौन सी गलतियाँ की हैं और कौन से अच्छे काम किये हैं। क्या गलतियाँ की हैं? तो आने वाले साल में यह विचार करें, कोई गलती न करें। कोई गलती हो जाये, उस पर विचार करें– मैं आगे यह गलती नहीं करूँगा या नहीं करूँगी और मैं हर काम अच्छा करूँगा या करूँगी। किसी की बुराई करना अपने आपको अच्छा कहना बगैरह बगैरह। *–महाशय धर्मपाल, चेयरमैन, एम.डी.एच.*

साप्ताहिक आर्य सन्देश

7 जनवरी, 2013 से 13 जनवरी, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 10 / 11 जनवरी –2013

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 9 जनवरी, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

महाकुम्भ प्रयाग में वैदिक साहित्य प्रचार स्टाल

साहित्य, संस्कृति और धर्म की त्रिवेणी तीर्थराज प्रयाग में महर्षि दयानन्द ने पाखण्ड खण्डनी पताका फहराकर तत्कालीन धर्म, अध्यात्म और कर्मकाण्ड के नाम पर हो रहे पाखण्ड, अन्धविश्वास, कुरीतियों और कुप्रवृतियों को जड़मूल से समाप्त करने के लिए वीड़ा उठाया था। प्रयाग में लगने वाला यह महाकुम्भ प्रत्येक दृष्टि से विश्व के किसी भी मेले से वृहद है। इसमें हिन्दू सनातनी सम्प्रदायों के लाखों सन्त, महन्त और गुरु आकर अपने मत का प्रचार करते हैं बल्कि आर्य समाज भी वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए अपना पाण्डाल लगाता रहा है। इस वर्ष भी आर्य समाज की ओर से कई स्थानों पर पाण्डाल लगाया जा रहा है। इसमें विचार टीवी और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा भी साहित्य और फिल्म के माध्यम से प्रचार करेंगे। प्रचार शिविर का पता– प्रथम नैतिक फिल्मोत्सव, महाकुम्भ क्षेत्र सेक्टर छह, नागवासुकि बक्सी बाँध, इलाहाबाद, उ.प्र. है। विश्वभर के आर्यजन, आर्यसमाजें और आर्य प्रतिनिधि सभाएँ प्रचार–प्रसार की दृष्टि से दिल्ली सभा कार्यालय 15 हनुमान रोड़ नईदिल्ली पर अपना साहित्य भेजकर प्रचार में सहयोगी बनें।

प्रतिष्ठा में,

श्री.....

महाकुम्भ–प्रयाग में वैदिक धर्म प्रचार शिविर

साहित्य, धर्म व संस्कृति की त्रिवेणी कहे जाने वाले तीर्थराज प्रयाग में लगने वाले महाकुम्भ2013 के शुभ अवसर पर आर्य उपप्रतिनिधि सभा प्रयाग के तत्वावधान में वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार हेतु शिविर का आयोजन किया जा रहा है। जो आर्यजन महाकुम्भ मेले में भ्रमरार्थ जाना चाहते हैं वे प्रचार शिविर के स्थान महाकुम्भ मेले के सेक्टर संख्या.9, ब्लाक संख्या 66, पश्चिम पटरी, मुक्तिमार्ग एवं सै. 14, अरैल क्षेत्र, संकट मोचन, वल्लभाचार्य मार्ग, मो. टावर के पीछे पहुँचकर लाभ अर्जन कर सकते हैं। पहुँचने के पूर्व पंजीकरण कराना अनिवार्य है। मेले की तिथि 13 जनवरी से 25 फरवरी 2013 है। इसके लिए सम्पर्क करें–

सन्तोष कुमार शास्त्री, 9919020017, आर्यसमाज कृष्णनगर कीडगंज इलाहाबाद

नेमस्लिप्स

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने की छोटी सी शुरुआत : कापी–किताबों पर चिपकाने के लिए नेमस्लिप्स। 21 स्लिप्स का एक सैट मात्र 10/– रुपये प्रति शीट।

शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित छह सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/–रु. सैकड़ा	मात्र 300/–रु. सैकड़ा

ब्रेल लिपि में
महर्षि दयानन्द जीवनी
मात्र 1000/–रु.

आर्यजन अपनी आर्य समाज की ओर से अंध विद्यालयों को भेंट दें।

प्राप्ति हेतु संपर्क करें।

–: प्राप्त स्थान : –

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड,नई दिल्ली

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; टैलीफैक्स 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : सुशील महाजन सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर